





अमरकान्त ४॥

[illegible]

9

स्वामिनां निश्चयं च न च यस्यात्मवेद्यं समद्वयमिह सर्वं कल्याणं ज्ञानमर्कं क
र्या नस्याद्यि यश्च सिद्धिं सिद्धिं नयं सगुणं सर्वकारं प्रयच्छन्त्या वैश्वकुं
टिलिः सगुणं यश्च वैश्वः नृणां च वैश्वः यश्च नमो ध्यातुं नृणां यश्च नमो ध्यातुं नृणां
दिग्दियाः व्याप्तिः नमो ध्यातुं नृणां यश्च नमो ध्यातुं नृणां यश्च नमो ध्यातुं नृणां
लिङ्गाया यश्च नमो ध्यातुं नृणां यश्च नमो ध्यातुं नृणां यश्च नमो ध्यातुं नृणां

शीघ्रकसंस्वजाय ॥ ॥ **नागसाला** ॥ ॐ नमः शीघ्रकसंस्वजाय ॥ **जाडा** ॥
 धर्मसाधु किनहुदया नदका नी
 वन ॥ **जाडा** ॥ कमलासनस्थ
 का ॥ सहजानंदकालिका ॥ **जाडा**
 दत्र ॥ **कावाक** ॥ नरुटमं हुकुमाला ४ **वाकजाडा** ॥ १ ॥ **नागार्जुनालि**

२

॥ विष्णुसत्सुखः विष्णुविंम्वारमाकात्रविद्यायिगसंसंख ॥ धु ॥ नमामि
 वागीश्वरः सयत्रमनिहुदया २
 यत्र कीनहुदया ॥ ॥ यिकनी
 कूटमविमयन ॥ ॥ धीमव
 वाययि यहुदवल्हसं ॥ ॥ सुत्रासुवनमिगः टडावत्रहृरुनयिय

समस्तमन्त्रः ॥

ब्रह्मादिब्रह्मः किं न ह्युक्तं न यन्तः ॥
सामानिकतकना किं नः पूर्वोदितं
उक्तं न कृत्तु यन्तः यन्तं न ह्युक्तं
यन्तं वृद्धः विष्णुः किं नः विष्णुः
श्रुदियानना वदति किं न सा तसाः

॥ १ ॥ ~~ब्रह्म~~ नवी ॥ मध्यमन्त्रः
दुर्जं वदितं रज्जुयन्तं गजयानि
किं न वा यियात्र ॥ २ ॥ नमः
नः विष्णुः नः यन्तं न वानि रज्जुः
रुद्रं न ह्युक्तं न यन्तं न वानि रज्जुः ॥ ३ ॥

३

वदानसः वाडयदियं वाडयदीयं यन्त्रिजातुदानं रज्जुसन्तनाडयदियः चडवि
दिगारुवनः वाडयदियं श्रीश्वं उयन्
लनं विनयायियः सफज्जुष्टादन
यकं चकाः सामिकूलनिद्विनिदि
विननसारुगानियानिगवनाः सनकूरुमडदनयन्त्रिसयनियूजा रज्जुधः

संज्ञापूर्वकं ॥

वयलिरुत्रधिः सफयत्रियुत्रिगः रुवऊनधिसंगः नलसगुमुकुं ॥ ३
॥ ~~रागाजलित~~ मदायं चयायसमया यात्रीमुवयिथानं
रदमादिगादभवलः आनाधिया नः समया नन्द रुत्रगिहा ॥ ४
विनविनध्वनवयिथानः मऊन माहनिः वीधरुलियं रुवऊं का
नाचलिदानदेवीः दानयगियविघ्ननिवात्रय ॥ ॥ संदिशी सवत्रमाद्य

४

कात्रचकुं रुवऊ कायविध्वरुलिया रयागयागिनी मनीयविवूऊनः सम
यानन्दरुत्रगिहा ॥ ॥ यववेः
श्विमदियायिगा रुडरुत्रजमाद्य सिद्धिमाज्यः अक्षरु समयानंद
रुत्रगिहायि ॥ ॥ सिंदनाद वाडियालाः उमनूयभादः अष्ट
यागिनीः दानयूरु रुजानंदनयूरुः अवधूवत्रयियाः कर्षयानचनन

निर्माणादि॥

रुद्रगिदा॥ ४ ॥

॥ श्रुतागुरुवी॥ निर्माणात्रिचतुष्टिदलसनाल

रुः सध्वगत कादिवृत्तादत्रयि

रुसमिजयुगलिगाधमाभिनिः

नलनिलः सुगोयमकलनादत्रयी

॥ ५ ॥ ॥ तुंनमाभिदवीशोवजवी

नासितः विरुवद्वनधस्वसमस्त

दवीरुडादियानः यर्धुगिनीका

मत्रयशीरुगसविशुद्धसंतुलनत्त्ययति॥

॥ वसदलसनात्रुदवधमस्य

जं

कषाउभदलसंरुगाचकुंरुद्धाप्रिभगदलकमत्रमहासुखचकुः कं कालन

यशीरुवकनाथं॥ ॥ ददति

जिनविश्यात्रिगः गिरयानरुदनी

शुवगंरुगध्वयानादत्रयिरुयी

थादिदधनुमिगगसुगगयऊः

निजिनरुनदायतिविनध्वनी

॥ ॥ दय्यनयगिर्विवूऊनऊ

यंदायमप्रुदिनिसिसमरुंगवऊदवीरुऊलऊलमात्रुदुश्यायसत्र

॥ गङ्गा कदम्ब ॥

नाः दुर्गा गिता गत मा क्रय दामा ॥ ५ ॥ हे ॥ **गङ्गा गङ्गा** रजवी ॥ गङ्गा क
दम्ब नयं च ह्ना नख नय शय शे
॥ कु ॥ **गङ्गा** देवी व विनायका
समया नंद ॥ ॥ विन विन
द्वयया जान नंद ॥ ॥ यं च वृद्ध पच स क व ख नय श द वा ज स न नय म दि

३

॥ गङ्गा गिता गिता ॥

तद्वदया ॥ ॥ उं आ हूं की ख ख धन क मि न श उ म नू य धृ क्षा नि वि न सा ज्ञान
नंद ॥ ३ ॥ ॥ **गङ्गा** क नं दि ॥ ख ठ डा गि ती द वी गी रु व न या
यि मा श वि प्र मा न द रु द य वि ना
ऊ वा ना दि स्मा द्वि सि द्वि दाय नि
ग न न क व धृ मि न श ० ॥ न्य डा गि ती द वी नि न व धृ ॥ ॥ वा य य मा दि ती द

वीधितवर्षाशयश्चिमभंवात्रिनीलोत्रवर्षादहा॥ ॥नेमागसंगसिनीदलित
 वर्षाशयश्चिमभंवात्रिनीलोत्रवर्षादहा॥ ॥नेमागसंगसिनीदलित
 यकमृदाहृत्तनाश्चस्वविक्रमंरुव
 व्यागरेनवी॥३॥आं हूं रूं अं न
 कयः अरुवगल्यस्वयययत्रिणव॥ ॥स्वस्वः स्वादिश्वत्रियत्रालः ययः

घाटयश्चिमभंवात्रिनीलोत्रवर्षादहा॥ ॥नेमागसंगसिनीदलित
 रतयुतयिमावासांजयस्मात्रशदा
 दवेनिगृह्णतु॥ ॥दानय
 माकित्रश्रुसंसात्रगथागतयं
 समयात्रदलुदातयमिसर्वकाश्रसर्वसिद्धिसंयतिमाकित्रश्रुसंसात्रगथागतयं

उपवत्तमसु ४॥

कंथयिवंथडिद्युथमाशिकअथमगत्र॥ ८ ॥ ३ ॥ ~~नागहरेववी~~यवत
मंठलःयाविजंऊलहाऊवःव किमंठलंरुनुमंठायत्रिमुक
यमयागुरुकादियत्रियत्र॥ ६ ॥ ष्टदवलिरुद्ररुद्रम
वैविद्यनामयश्चरुमात्राश्च गयश्चामश्चिद्वश्चिन्ददृष्टी
मूढविगंकारुसिंरूद्रं॥ ॥यंविजंऊगडिजामःयंमल्लंयंयदी

अतिन ४॥

यंरसमित्रयःयत्रिगःयद्रुलितःउंकागामगतखं॥ ॥उंआहंनयमुता
दमादिगवहिविग्रन्धत्रीश्चकनयी यखदवमानिगुःशियाद्रुप्रयव
स॥ ॥उंकात्रादिकमन्धवि जीतमदनाद्विष्टिरुद्रानयानि
द्रुगुनिमगुलियुदंरुनयित्रले वडावलितल॥ ॥ ५ ॥
~~हवागयथमंऊवि~~॥अतिनअननऊलकाहुवमासःमनुसधुलचकुनायाश्चक

नदायक सर्वे नवायित सद् ऊक न सं १ ऊग न मनु खधित मुन्य क न ना वह
 गभा न ता स नं वि न क ल र्यं ॥ ॥ व ऊ य न मा न म यः ग न्ध म व
 संयुक्तं मं र्व ख धि र्ग य र्ग यि य र्व ॥ १० ॥ र्क का न म नु य ध म न व न्ध व
 ऊ संख्य यि ग वि या न क ल र्यं ॥ ॥ य न म ल य न र्ग न क न य र्ग व
 आ क र्ग म य द कि नि ऊ न ल र्यं १३ ॥ टि गि र्ग व न द व नः य क र्ग न स ल र्य मा नि

य र्क का कि न र्ग ॥ ॥ या या दि आ च म न दान य न र्ग स म व क य हा मि न वि म न
 क ल र्ग मं १ म हा ना ग द व नु य वा धि वि र्ग न र्यः स म य र्ग ह न व क व
 की लु र्ग ॥ ११ ॥ ॥ वा ग न टा ॥ व क र्ग व र्ग वि नी ना च न मु द
 वी १ आ ग द म नु ऊ य र्ग व न की व न ॥ ॥ ॥ गु र्ग द वी वा नू वि
 म हा मा म कि द वी १ ऊ ग न य मा दि न म य न र्ग स न र्ग ॥ ॥ आ ग न व द

८५५८०॥

प्रनामवस्वान्नरुद्रागधर्मादिक्कागुत्रुडयदय्य॥ ॥ यं वं वृद्धस्वमन्त्र्य
 ऊरुक्कश्मयात्रकागिनीमाभद
 वृचनगिल्लगनधनीयाश्चनयी
 ॥ ३ ॥ ॥ रनागर्ध्वरैत्रवी॥ नम
 सखडगाधयू॥ ॥ ॥ गताईईः गताईईः गताईईः गताईईः ॥ ॥ ॥

पुस्तक ४॥

ज आ वि ग न का ग ध नृ श व ऊ य ष म दा व नृ ॥	॥ ध व ग म स रं ख न द द
ध नृ श म न द स सा हिय व नृ म	नृ ॥ ॥ मा या द द वी न ऊ गु
श सा हिय क नृ ण स त्व म दं ॥	१३ ॥ ॥ द्या ग मृ र्मा मा मि
॥ गि व ऊ न वि ष मि म धु ल मा मः	थि मि आ न द म गि ध व श व ऊ वा
मा दि आ वि ग ण स ध वः ना ना व सी म दा द नृ ॥	धु ॥ गे ता दं दं गे ता दं दं

गतागगङ्गङ्गङ्ग ॥ ॥ निलवर्णचतुर्वर्णकयमित्स्वयिनर्णः यन्मान
 दसन्ननिधनाश्चिखवज्जर्ज ॥ वज्जय ॥ ददजा
 रुनहासश्चिख ॥ ॥ वज्जय ॥ ददजा
 मानदसन्ननिधनाश्चिखवज्जर्ज ॥ वज्जय ॥ ददजा
 यन्मानदसन्ननिधनाश्चिखवज्जर्ज ॥ वज्जय ॥ ददजा

१२

नीदविः सहजानलु सन्ननिधनाश्चिखवज्जर्ज ॥ वज्जय ॥ ददजा
 चनमजायाधिना ॥ १४ ॥ ॥ वज्जय ॥ ददजा
 ननः कियो यिन्नर्णस्वनाः धन्यी
 ममहियासमानः मकूटकसा
 समननायाः समनहृदनिमान्काजाश्चिखवज्जर्ज ॥ वज्जय ॥ ददजा

॥ वज्जय ॥ ददजा ॥

रुदातदिया साग्रसा ॥ ॥ सा लिख्यनः न वसुसुमयनः कार्यं नरुवयित
 वात्रा शमगानिना वरुवि वि
 ॥ ॥ गियधमरुवठरुः द्वाद
 वकात्रा शमविनाहिनीः व
 मिजन्धया ॥ ॥ गी डोगिनि लावः रु
 उकात्रिया डलः सकरु नरुव

१३

१३

नम्रात्रा यशसमया ज्ञानदः रु निग्यवाः मधुनः सत्त्व प्रावडवायादि ॥
 ॥ १५ ॥ ॥ शमगाका नदि ॥
 कवादि शकमले कलि सयन
 रुक्म विनः खन रुत डि वेयि
 मीयि डायि ॥ ॥ दय रुका गिनी लयन डायि शमसि कू नवदिया लडा

१ विविध वि० ॥

दियानसमान ॥ ॥ सासुदुदलयालः कं वियवा नाशवतु सुखदुयियक
मरुनादा ॥ ॥ रुतयिग्वजलि दमकडनू विनाश नयनात्रिमा
ज्यउरुयनउविना ॥ १७ ॥ ॥ शत्रागर्गधारेनवी ॥ विविध
विदुनूनः सायानविगमिवद नशदवासरगवः सुवनदुदक
नूला ॥ ५ ॥ नायेननमा मिथीसंवन विनाशवकृ गिनील गिनासासह

१४

२ अनानिनिदिगजा न० ॥

समंगना ॥ ॥ वकंवा नाहि आत्रिगमकलुशु विगं विनविलख
लिसमनर्ग विना ॥ ॥ लमक दहनवित्त्वमासमुदकयशक
नूधनूध नायलायन विस्वक ॥ ॥ द्वादशरुद्रध्रियाः वाजि
वडवदनशनीमसंसावः गराव हनुविना ॥ १८ ॥ ॥ शत्रा
गर्गमाउ ॥ अवनितिनिदिगजा नः नीलसमदहा शककनयिनयतिरिख

मवदना॥ ॐ ॥ गता हं हं गता हं हं हं जागज्ज्वनकारनाया॥ ॥
 निविधिगः यनदुगिशादिमं
 मथ॥ ॥ हनिदलवक्ता
 इतिमकुः ययद्वनध॥ ॥
 स्रज्जगगविवीष्टिगवन्नद्वदयकं॥ १७ ॥ ॥ रजागखठकान

१७

यज्ज्जानिनीदिगवामजानः स्वर्गकीनममालसंशाम्भरनागद्वस्वमाह्वं
 विनयासाः विरुवननायाः जूव
 दमहात्रायधमः जागहृत्स्व
 यिनविनविक्रमः महाकाध
 उर्ध्वयर्ध्याः दृष्टकनायाविश्रुगिकिन्नतार्यिदीगज्ज्वनार्ककन्नतय
 ॥ नमामिगीव
 यष्टुकिताहविश्वनाथविश्ववा
 नाया॥ ॥ जूगिदृषनाग

ज्ज्जानिनीदिगवामजानः

२५ य वा ४८ ११

नाः वेदी संज्ञा सा त्रा ख द्रु स्रज ता ॥
माया या द व र त ता १ स म न स
मा दि ग द द ॥ ॥ य लो र
यू न स न मूर्ध का या स्रज त ल
म्य ल स्रज वि त्रा ॥ १९ ॥

॥ मा य व मा या यू न द ल व क्ता ओ द यि
मा या त्रा ग वि मा दाः ह्री न वा यः ४
त ताः यु क लि त मा त्रीः क यू न त न
ता ग म व दि ग च त ताः वा य स्र ल
॥ **ना ग म धू म ग** ॥ ऊ य वा ४८ ११ः ह नू त य न

१३

म १ स य व स्रज स्रजः ऊ ग त उ ध ज नी ॥ यु ॥ ग न र न व त्रि या द क म न स हि
म लु लः म र व न नू तं मूर्ध का या १
त्र य ष्ट उ ला वा गि ति गि ति ति ति
गि य र्थ नः गी वा नू उ त न ल नि
कू ट क म ॥ ॥ गि न ग सि धू वाः क ऊ ल दू वा १ क मु त्रि क र्थ नः ॥

२०५॥ १॥ १॥

॥ चकी कं लुल कं गिला च क स्य स्व न र	खिगः गी व नू उ न ल मि न मा ला
१ सि न च वि च कीः न याः रु सा	वि स खि गः गी ग न क ता दि र्वा
वू लि ना या ॥ ६ ॥ ॥ य रु स थी	द नू डी नः मा नू का ना याः इ रु
ना थ थी स म्ब न ना या ॥ ॥	व ड क ना ग क दा थ ध रि याः
कं थ वि या उ र व ला र १ सं य त जा गि नी क म न वि द्या सिं ग न स दा स	

१६

२०५॥ १॥ १॥

स्व म त्रि न य म्भ द ॥	॥ व ड वा ना हिः आ त्रि ग न सं व नाः ना र्थे यि व रु
वि द न लं ग १ वा रु नि का न्ने यी	या रु दं गि द नू वः अ ई रु व रु
ल न य सा द ॥ ॥ स रु ज म	वु लि न यि याः म डी गि क र्ध या
न थी रु नू व च न ध य म्भ द रु य	रु आ लि ग धः कि दं गि द नू व
वि ना स यि गुं न्य क नू धा ॥ ११ ॥	॥ ना ग रु र्ज नि ॥ रु य १ वा रु

तिस्रयत्रगुहाकवि २ अश्वयड ४ स्वयसंदात्रनि ॥ कु ॥ नूनंमूनका अ
 न्यहाः कूं कात्रनाचयिमात्रनिल
 यल्यः किनऊनति वऊनऊगिनी
 खला २ कत्रतिकयात्रकैलेख
 तिन २ गीवत्रोद नत्रसिलमाला ॥

वात्रुनि २ किमयदयातित्रदहा
 ॥ ॥ ऊयं २ हाउ आरुवनस
 त्रि ॥ ॥ ऊयं २ त्रोट समसान
 ॥ ऊयं २ वाखकूंः ऊगनसंसात्रश्यन

१०

ॐ सामि अदयवाकृति ॥ २३ ॥ ॥ **आगसंदात्र** ॥ कूं कात्रसंजातः ॐ
 वनीलः इमिसमदहा २ खाकाल
 माकला ॥ कु ॥ ऊयं गु अचल
 श्री २ ऊयननाथः ऊगनयात्रित
 तिनीदिनः वामजानकः यात्रवदनः तिनीवाचला २ ककवाकसहयंकनः अ

कलनसमइ किः कालाकलनस
 अन्नगमत्रुकिः खमयागकलख
 महाकाउत्राया ॥ ॥ अडा

ॐ
 श्री
 नमो
 भगवते
 नमः

२७१॥

किञ्च विद्युनिहता॥ ॥ वृक्षद्विहजमयतामनः दृष्टिदहनः सुविनाश
दृष्टानिखिनादितायनाः सद्यकिञ्च ॥ नः विद्युर्दृष्टा ॥ विविदिचि
लोत्तरप्रधा विद्युषिगः दिव्यत्रल ॥ सस्यमोत्रीरुद्रगगतां दिग्गमस्य
यतिः सिद्धिवल्लहलदायकं ॥ २४ ॥ ॥ वागकोशिकवसुग ॥
अमृतसिद्धसमश्चिः ददयुल्लखना ॥ विविदिचि त्वमधिमकुट विद्युस्त्रिणा ॥

॥ २५ ॥ ॥ नाययीत्र श्री ४ अथ विनाशनावा आर्त्तनन्द विनाशयिः अथवा
॥ वागमडरुवः विद्युमरुद्रा ॥ दशनाश्रयुक्ता आलिगताः अथ
यमहासुह ॥ ॥ विनाशवत् ॥ निः रुद्ररुयंकनाशस्य निदिनः स्व
निः गङ्गा निवासा ॥ ॥ मागव ॥ पुनर्दृष्टानिखिना विद्युर्दृष्टा ॥
विमसिष्टगताथः गगता विनाशिति ॥ २५ ॥ ॥ वागसिमानवसु ॥

(किं न वनं कुरु न ॥

जिन वनं कुरु न निःशुल्लख वलम न शविनासायि समन संः ददा आलिग धम
॥ ५ ॥ नि वस ह ह न यः शुभा
उ न य न ॥ ॥ वाय स र ग स म
मा ज्यः नि र व ता ॥ ॥ अ व क
न य म स्व संः ददा आ नि ग धा ॥

न सं व द्य २ ग धा आ नि ग धाः आ न
न धिय म य न २ ना गा वि ना ग इ यिः
क नि सं जा गः वि रु र व ना २ सू न
॥ द ह दि ह रु व नः श्री आ ग म य ना २

२१

पुनः लिख कुरु न ॥

य न मा मि ह न ख लिः आ नि ग धा ॥ २३ ॥ ॥ न ना का मा द ॥ एक नि
ग हं का नः ला रु व म नू तिः ०० नु
लि नः शु धि क ल नः न ले म कू ठ
द वि रंः रु व सि धू ग क न नं श वि
नि वि द्य स न क न नं ॥ ॥ अ न ना जा न लि नः गी रु आ न वि रंः स र्व नि

पुष्टेन दधाना नरवामगर्जनी हृदि पाशधनः खवात्रिणः सर्वधनकनका ॥

॥ नानात्रलादात्रनोयलः क
लात्रः लीषमवदनः विरुवनवा
यागिसर्वरुयदत्रनः पुठयिमा
कादिः वादिगयादः सर्वसिद्धिमाकुरु लद ॥ २१ ॥

किमस्वत्ररुषितददं रुदयुक्
याः पुत्रं ददिवि ॥ ॥ विनाश २२
आदिमां गमानं संरुसुवनलज
॥ २३ ॥

२२

२३

॥ सकत्रऊगागुत्रसम्बत्रवित्रा २ अत्रयसकत्रधकत्रिगसुखचिन्ता ॥
य ॥ सम्बत्रसम्बत्रकूत्रमदि
नत्रन ॥ ॥ दवीवात्रादिगु
नविमत्रविमत्रा ॥ ॥ सक
त्रातियगिसुगागिवागिनत्रुठा ॥
॥ रावालावकूमादकिविकचिन्ता ॥

२ कने ल्या ४॥

२ अन्तर्धर्मः सुखत्रयि न गत सुविन्ना ॥ २८ ॥ ॥ रागा नाट ॥ कने
न नृयत्रा क ख व क व न नृय व
ल वि सु र्धं ॥ कु ॥ ना च यि ज
द म नृः गी य न न सि न माला ॥
अथ विद ना २ अन्तर्धर्म व न स धया ल वि मु द्धं ॥ ॥ क क वा न द नृ

२३

२ कने वि क सं व ४॥

व क क क द वा न वि ना २ अन्तर्धर्म व का क ग गि स द सा नृय ॥ ॥ रु न कः
रु ल क द म रु व न नृय द २ नि
॥ २९ ॥ ॥ रागा का मा द
न नृय सं द्या यि म ग न द न व न
मु न ल क न र्धं ॥ कु ॥ न मा मि गी यि न क ख नः मा न रु व रु य द नृय ॥

नि नृय व न ना थ य क स म्ब न ली य
॥ क वी क स रु वः रु स म द द्याः
२ द्या द म नृय जा व द व नाः द्या द व म

॥ चतुर्त्रिंशतिविधस्यैवः ॥ ^{२४} विंशतिविधस्यैवः ॥
 दक्षिणैर्विंशतिः दक्षिणैर्विंशतिः ॥
 नः प्रात्रिकातिः यदाकांताजुगी ॥
 नतामिथीवकसंवन्नाया ॥
 धनियाः रुतयिगी गणी कृत्रि सा ॥
 दानवगिल्यमनाद्वः सद्यमधुलः ॥

२४

॥ प्राधिका ॥ ३० ॥ ॥ प्रागरेव विवागर्कजित उदक हाथ धनीया ॥
 कसनकलिः जगवाल्म्य ॥
 मखद्वांगकयात्रधना ॥ ३० ॥
 गुलिना ॥ मानयिन्नवायिया ॥
 यागवुक्त मदनः वाममहाथधनिया ॥
 ननसिन्नमाना ॥ ननदनिनः ॥
 मन्नकत्रलिः कथात्रविमन्नावा ॥
 शीष्मस्वन्नायाः वाक्कुलिबुक्त ॥
 नः सायाः साध्वर्यमद्वजिना ॥

॥ ३० ॥

अथ य ४॥

कनकाः रुद्रः च उ मख अति विक्रान्त धरा ॥ ॥ अत्रिधयकारुषिय
वचाययियाजः कात्रिना विविम
दङ्कठाशकाः वायुचर्मस्वत
म्यलनायकः विनियकुमदावी
लेखनः युं ऊयीसयावसं सलधला ॥ ३१ ॥ ॥ रागानिवादा ॥ अखयनित्र

मदाशविष्णुकलिगः अइच
मदा ॥ ॥ शुभिवीनवित्र २३
नवित्राशकनूधर्मं गीतः वीनवी
॥ रागानिवादा ॥ अखयनित्र

ऊनः अद्यय अत्रयमः गराहकमल ऊध्यायिगाशुन्यगाविनासियः वि
यादेवः यानविंदुसमकदिगा ॥
कनखरावदुदुल्लहसंका
सिगः ऊनऊचदुसमयायिगा ॥
चकवगिः भवमलुलरवनिना २ निर्मत्रदयालवकध्यायिगाः अदि

धु गानमासिनीलालम्हः नित्र
दिगा २ सत्रदचंदसमः कऊयका
॥ स्वदगाकागवत्रः साधित्र

नीसिद्धकृतमप्यसाधना ॥ ॥ ज्ञानन्दयुत्रमानन्दविप्रस्मासदङ्गः चतु
 ग्रामन्दङ्गसंरुवा १ युत्रमाप्यवि
 गगर्स्यायिमा ॥ ॥ इव
 नन्कागिसिद्धायानंगगाश्री
 प्रधनः युनुमहासुखजानक ॥ ३२ ॥ ॥ श्यामगगधरनवी ॥ ॥

सुवनकलितमयगिणूत्रायनयवंगि ॥ ॥ नाचयिवङ्गसुखयत्रमय
 नलितवंगि ॥ ॥ प्रसिसद
 ॥ वङ्गविदयसुदयशावा
 मापन ॥ वङ्गिधारीवंगालिः वङ्ग
 कडवाकिनी ॥ ॥ नमामिगीङ्गागं वलः ॥ ३३ ॥ ॥ श्याम
 लिदवीशसिधितियायिनी ॥ ॥

सुवनकलित ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

गुंदवीः श्रीगुवनपुयिस्था ॥

॥ यर्वडरूपपश्चिमदक्षिणादिगदवीर

जाकिनिद्विपिनिःचउमिकंवा

ऊनि ॥

॥ चतुर्गदिवारस

रुलंगुदवीरतिनिनगुदवीता

चंगिदवी ॥

॥ दप्रिदत्रवसा

२०

रुदकुसलगाहाश्याउमजागी

नीः समप्रसंगव ॥ ३४ ॥

॥ गगकनदि ॥ श्रीमंरुनाथवलः महाचितविजयाप्रश्चंददासस्वसंधात्रीना

१ कि नशानगनय नि ४ ॥

गवासदरूपयि ॥ ॥ नमामिश्रीमंरु कुसात्राशुगदिभ्यः ॥ जगगगुन

गुनवावायिना ॥ ॥ यस्तु कथ

त्रगुरुयत्रमगुनूनायाश्रीधः

मैयगुरुननयात्रमउलनंरु

ना ॥ ॥ जगगनाथजगगनी

लंजनामाशुश्रुसर्वभक्तविषा

त्रयंदितनीनंरुना ॥ ३५ ॥

॥ ॥ गगनामकवि ॥ किनववगनयनिलुवनशीकायगकः नीचीम

नमसि किनवत्रमूनि शनयात्रमद्युल मास्यगमिदुत किल्ल (६): ऊरागना
 थप्रहयदागा ॥ ध्रु ॥ विजा
 दवयनमासिवृगमत्रलोक
 यलिकमत्रायुत्रपगिचंदाम
 प्रकासितवाधियात्र: वासकमलधनदाथशुक्लसुमंगल: प्रागवसुव

२६

दात्रिदइस्वरुयदत्रना ॥ ॥ हूं हूं रगवति काया रगवति: नमामिथी
 वृगमलदवंशनमासिश्रीनल
 ॥ दमनुमिद्यागिज्ञातत्रद्वन
 श्रीप्रहगारुवसित्रगगधनीया:
 ॥ शनयात्रमवि ॥ नमामि शक्तिनक्षत्रुकचंद्रकचंद्रमत्रुति आत्रिगिग

नमामि किनवत्रमूनि ॥

शयं च ह्यनयं च धातु खत्रयाः वर्द्ध धर्म जात्रय खत्रया ॥ १ ॥ न ता हूं हूं गेता
 हूं हूं रजगग संसात्र ड धात्री यामः
 वा ॥ ॥ न मा मि र्शी भयत्र खत्र
 त्र नि सर्व पाय खत्रय कत्र दान यूनय
 मी धातु वा गि भवत्र खादश इवात्र यलि मदिता १ खादश गोत्र धमून मून कात्रा सर्व

नादत्रः न मा मुन मा मुयं च किन ख
 स वि सि द्वि वत्र दाय नि १ इ वि गय १ ले
 हूं मा क्रय दा ॥ ॥ न मा मि १ ख

॥ न क व द न १ ॥

दवय त्रि स खि गा ॥ ॥ न मा मि १ वा गि खत्र ममु लय मगि त्रि नि वा गि ता १
 स ख वि मा दि ग इ ख वि ता स न य
 ॥ ॥ **१ खादश मला उ** ॥ न क व द
 ऊ ख भ य स क ग न व न धात्री ॥
 भवत्रा १ स यत्र जा सा भय त्रि य त्रि ग ड धा त्रि ॥ ॥ द दि न धी ग व य कि ॥

न मा मि किन च क ख वा ॥ ३ ॥
 नः त्र ल म कूट जात्रं कृता खत्रय
 ॥ न मा मि मं र्शी य म न ल
 ॥ द दि न धी ग व य कि ॥

॥ ॐ नमो भगवते ॥

वाममहाकात्रसगधमधुलमाशयकलितथिगा॥	॥४॥
यादिव्यदियायिना१अशुरुय	वक्रव्याविद्रिगद्वनता॥
वक्रवत्रयसात्रदागरुनयीया१	युत्रवत्रनमात्रसिद्विवत्रयसा
या॥ ३१ ॥	॥५॥
यद्वगतित्याधियजुनिगाधखत्रा१मदिमूकात्रलारुयना॥	गक्रमस्वर्गितयनिगाधव
	तनूविदिल

३०

नर्मकासाः ॥ ५ ॥ गमालियाविष्णुः सात्रियादर्यः सात्रियाइखविनासुधर	
सात्रियासात्तासात्रसंकासाः भव	वयमइखविनासुधर ॥
यत्रशुवाभाकृषावकः स्वर्गलि	श्रुतयात्रददिनकयाश्मसल
वनस्वत्वाहुः स्वर्ग्यत्रकत्रतिः	वास ॥ ॥ विविगसुकल
कलियासाः ऊठाऊठमानिमल्लिका	श्चम्वादत्रगत्रविगत्रम्वादत्रस्व

८ मधु १२ पृष्ठ १॥

साः या यत्र मित्रि मित्रि वा ऊं ग ॥

॥ नत्वा तत्र विगतं लोका निवास

खिक मस्व गुणि शुंद नार वि

नाद लो न मस्व दाना न मोक्ष

रे गक्षा धियर्ग ॥ ३८ ॥

॥ **स्वागवसंग** ॥ मधु प्रिय प्रिय

नाइ य नि कृना ला र स क न द

वः ख न्दि न या दं ॥ के ॥ मी

आ दि वृद्धी म इ कृ मा र ल अ रि वं धू नि य स नि ह ख न ॥

३९

८ नमो सिद्धि नय मय ॥ पु

कं क म नू चि वा गु न चि व वि स्व मा र शु न्या ग रि व क नू द वि दाना ॥

॥ वि स्व या वि स्व म कृ त या न ग

म न मा र वि स्व वि या धि क र्ग

यं गु नू ख यं रु ॥

॥ स न गु न

य न मा दि वि नू आ ला वि र

मा उ ति न द गी त य व न कृ नि ॥ ३९ ॥

॥ **स्वागवसंग** ॥ न मा

मि र कि न ध र्म धा दु ख यं रु र पि रु व न अ नू त य र्म धा यु वा गि ह न ॥ ४० ॥

॥ नमो भित्तु जितयच जितमालु रदभनु मिद्धा विंभन न ह्यसुख वाया ॥

॥ उवर्जमध्यामा ननुवन
महामानिषजा ॥ ॥ धर्मशी

सुलभाभसूयासूयल्लयि॥

नमि कु श्व र्ज स न य ना

गङ्गीलाक्षवर्मसङ्गुलमहासूत्रवायाश्चाधी

श्री कायागकश्चयेड निग्रजन

मृदुहस्तस्य निमग्नश्रितियावत्

वाममुक्तयुक्कधनयनाशदहि

致

श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीवज्रवक्त्रं नमो नमो नमो नमो नमो ॥

वाकवङ्गुलिखनविना ॥ ४०

॥ १२ नामवेनादि ॥ योग्यम

सत्यता नामधुलनामाः नामाद

सुदृढकाठिहाथनात्राःआमी

निर्वृदयान्नः वास्तुचितकप्रद

सा॥ ध्रु॥ डंकाटमधुलनाः ह्रु

त्रिना.त्रकागिति वृन्दयात्रेश्वरकधामखत्रिकले. प्रविगत. वायुसः

卷八

कत्रसमान ॥ ॥ यच्चैव कविः क्रियात्रः दक्षिणत्रयविदलियालश्रय
 ऋमयययकासत्रः उरुत्रयवेभ
 नादाः निमिषयंकात्रियाशकाय
 लः गगमकदंश ॥ ॥ त्रयम
 यर्मधातुखत्रिश्कध्यामधुत्रय्याः गाडाकिः वादत्रयकासहायित्र ॥

धात्रियात्र ॥ ॥ संयुक्तकार
 काकविर्लुमधुलनाकः दलिया
 त्रयगन्धर्वत्रययमः वृत्तमित्र
 गाडाकिः वादत्रयकासहायित्र ॥

३३

॥ ४१ ॥

॥ ४१ ॥ ॥ रवागविरास ॥ दिशुः कवकमखः गगतवदधुश्चनगन
 मकूटकसिः गिनिनाचना ॥ ॥
 श्वरुनमिश्रिषुवधुव्यायि
 नकत्रवजः विनासिगदध्वनि
 वयि ॥ ॥ तत्रमिमधुलमायाः उदियात्रममनेश्चथनयत्रवत्रमकत

॥ तमादवीवृद्धजकिनिवि
 तकिनरुनदायनी ॥ ॥ दहो
 रवासकवाटकः चतुमात्रसिधि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

युवसिनि ॥ ॥ श्रीवीशाधनिदवी सुवननमहिताश्चकत्रिद्विसिः
द्विदहिमसाता ॥ ४२ ॥ ॥ रमागत्रिद्विसिः ॥ ॥ ३४
श्रीवितनखलाश्चन्द्रनित्रिद्वि
कंयुक्रयागुधदवीश्चरुसाववी
प्रिनिवृद्धसावाश्चरुमीकलरुः कयालनित्राल्यला ॥ ॥ वायुवर्मव

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सूयत्यालिताश्चर्व्ववामादनसर्वाकाना ॥ ॥ चवननसर्व्ववामी उज्जिता
नानिमाताश्चरुनायिज्जमायवऊ
रमागत्रिद्विसिः ॥ ॥ सर्वाकानामहा
श्रिष्टुवनरुलयिः महासुख
॥ नयायत्रिनातः नयूनत्रिनाः श्रिष्टुवनः चक्रसूत्रयिनीश्चर्व्ववि

उत्तिष्ठ वज्रमना ॥ ४॥

किं हसं ॥ ॥ नमो नवीर्ह विः शत्रु उवादानः स्याम वधू गजचक्रादिगंर
वायव वासदादवीः कंका नवदनाः सिद्धवादानः श्वर्गधात्रि ॥ ॥ जय
कूत्रनागममद्याः दमयानियः कृपया नदिगजयुद्धदवी श्वनसा सिद्धवीष्टी ३ न
आनाधिया नः सुगुणिसुगुणिकस्य सिद्धिकनकं ॥ ४५ ॥ ॥ ह्यो
गकनदि ॥ श्रीदेवजननासादवी प्रियुवननाथं श्यचैः दिनव्याधिरा य

वज्रका गिनी ॥ ४॥

वैवर्हदहा ॥ ५ ॥ नमामि शशीयद्वागवेत्यरुद्रकशीगुक्खनिः वज्रक
गिनीसुन्याता ॥ ॥ यच्च दिगः शिक्तः कयि नः निव वधू श्रद्धा
स्ययागुध्या विगमविंइधना ॥ ॥ यस्मालि योत्रि चो लिजाः
गिनीदेवी श्रमडा गिलिलो वज्र हंका नसं वजा ॥ ४६ ॥ ॥
नागशर्मा नसि ॥ वज्रका गिनीः दवडा वाया श्रियुवननाथदहनयान ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कु	गायित्वायिनमदासुखत्रयः कलत्रियात्रवज्रदवीद्वयियाः जनरुद्रहान
॥	॥ उद्धृतात्रिषिदात्रः कमल
संरुदयि ॥	॥ रुद्रयिचयत्र
वृत्त ॥	॥ सगुणयसादः च
वृत्तसूदा ॥ ४८ ॥	॥ रत्नागामगी ॥ हूं हूं हूं ददधनसंसात्रगत्ररुद्र

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

दाभ्राजिगद्यकगधनू ॥	कु ॥ दवजगुक्तगना हूं हूं रगनाः रगः हूं हूं हूं ॥
॥ सननत्रवन्दिगत्रवधवत्र	कसमवित्रयनददधनू ॥
रावविमकूतविस्वस्वगुनकूट	यिरनमहूं रगीदवजगुक्तगु
नयुस्वयि ॥ ४९ ॥	॥ रत्ना ॥
सर्वाः सधूकत्रः दनूडात्रिना रगी विनूयाकृगुस्वर्गमहदवीः सधुननयात्रगु	

यायिगा ॥ कु ॥ नमामिनेनात्माः विरुवनमाताः वाहुत्रिदवीगीमगार्थत्रि
 सयत्रसूत्राः सत्रवांदिनचत्रनः अन
 नंदनवे अमिवचंदननचूवः अन
 गंगा अममवागममिठिअः अनग
 रेत्रवः अष्टुदगिनीदेवीः अष्टगदवासरः द्वायानरअममदारुयइनिनः

गात्रिद्विसिद्धिवत्रयसादा ॥
 गकूसमः यात्रिजातवनरनृत्त
 नित्रथसः कृषवन ॥ ॥ अष्ट

३९

निवात्रनिः अष्टगविष्टुनिवात्रनि ॥
 यतिनंजनकगिमयं अष्टसमकस
 मरुशयायसत्रनागति ॥ ५० ॥
 धालिनमोलीः यंचहूनयंचमडा
 लाः व्याचुचर्मकठिः रुषिरत्रमना ॥ कु

॥ विष्टुवियायिगः गात्रनिदवीः अष्ट
 खरुत्रः दायनिदवीः अत्रमकुल
 ॥ **गरवागतादि** ॥ यंचकयाला
 रुजक्षश्नत्रसिलमात्राः गीव्यस्व
 ॥ हूं हूं कात्रसंजागः खर्वलंवांदलनी

पुन क पा २४ ॥

लसमदहाकायाधियशीमहाकाशयचासुतनसदर्यरुयियाः। कायतवुसा
 कयात्रधना॥ ॥त्रकयतात्रा
 यमवेदनाइडयकालिताः। यिंग
 य॥ ॥कत्रटिकयात्राः धालि
 हालाइनागसिन्धुसिधुः नोयूत्रतामः अयूनागअरुननसुसाहा॥

त्रिनिनयताः धात्ररुयंकत्रलि
 त्रकंमः डलमनरुसाकनूधम
 नखलौगमः नागरुयतामकृदुत्र

४०

किनवनमोत्रिः धात्रितमताः वृद्धसममनत्रककविवाइयतात्रागान्धवरा
 वाः मममनकलिसाअनरुनसत्र
 अरुक्रुयात्रादिगाविदिगांनुव
 गहासुखत्रागहामनंमनकात्रा
 य ॥ हूँ हूँ नमामि यंचजाकिनीः यचरुगतिः हूँ नदाकिनीगत्राहूँ

ना॥ ५१ ॥ ॥२॥ गारुवती
 नः धुसिन्धुमात्रककुलवाग्धशग
 गगाधुम्वयूवकयष्टियात्रा

असुत्रकयत्रा॥ ४१ ॥

ॐ मवर्धुन नृसि सनयनी १ ओङ्क न स म दाः ॐ ॐ नात्रः ऊ दा धिय नि ग द किल य नी ॥ ॐ क ॥ ड र्क न ऊ क म दा लि म वृ यि चः ड र्क का ॐ न मा ॐ ॐ ना न त नः सि द्ध ना न त नः वि नः रु का धिय नि ग न कि न य नी ॥ ॐ क ॥ य ष्चि म न क व ष्चि गीः ना मा धिय नि म द नि	गार्थः मथ न ॐ म व र्धु काः मि दं ॥ ३ ॥ ॐ ॥ य ष्चि म दि ग द ४६ क त नृ या १ द्वा ला द्वा ला म दा ॐ ॐ ना क त नृ या १ द्वा ला द्वा ला म दा ॐ ॐ ना
---	---

४६

या नार्क हा सः वि क तिः स्वा ना णा न मा मि दं ॥ ४ ॥ ॐ ॥ द द्दि षा दि ग द्वा नः सु क ना न त नः क र्क क नि रु द दाः य ॐ ॐ ना नृ य ना धिय निः ग न की व ष्चि गीः क ना क य हा नि तीः द्या ना ॥ ५ ॥ ॐ ॥ द द न व न का न द वी य म दा ति र्यः क र्क यि ना लाः य व ड न	य ल ना दि १ क न क र्क वः म दा य य नी ॥ ॐ क ॥ द द्दि षा द म व द्य द ना र्कः न मा मि सु क ना न ना ॥ ५ ॥ ॐ ॥ द द न व न का न द वी य म दा ति र्यः क र्क यि ना लाः य व ड न
---	--

॥ साक ॥ वस्त्रो डीकानमदयाइता ॥

85

॥ दहदिहदाहः ह्रीं का नालय ॥

उत्तरदिगा १॥

नसासिदहाकाधुअरआसायनियनयःदानयतिनःमालविद्यतनिवा	॥ १२ ॥	॥ १३ ॥
॥ १४ ॥	॥ १५ ॥	॥ १६ ॥
॥ १७ ॥	॥ १८ ॥	॥ १९ ॥
॥ २० ॥	॥ २१ ॥	॥ २२ ॥
॥ २३ ॥	॥ २४ ॥	॥ २५ ॥
॥ २६ ॥	॥ २७ ॥	॥ २८ ॥
॥ २९ ॥	॥ ३० ॥	॥ ३१ ॥
॥ ३२ ॥	॥ ३३ ॥	॥ ३४ ॥
॥ ३५ ॥	॥ ३६ ॥	॥ ३७ ॥
॥ ३८ ॥	॥ ३९ ॥	॥ ४० ॥
॥ ४१ ॥	॥ ४२ ॥	॥ ४३ ॥
॥ ४४ ॥	॥ ४५ ॥	॥ ४६ ॥
॥ ४७ ॥	॥ ४८ ॥	॥ ४९ ॥
॥ ५० ॥	॥ ५१ ॥	॥ ५२ ॥
॥ ५३ ॥	॥ ५४ ॥	॥ ५५ ॥
॥ ५६ ॥	॥ ५७ ॥	॥ ५८ ॥
॥ ५९ ॥	॥ ६० ॥	॥ ६१ ॥
॥ ६२ ॥	॥ ६३ ॥	॥ ६४ ॥
॥ ६५ ॥	॥ ६६ ॥	॥ ६७ ॥
॥ ६८ ॥	॥ ६९ ॥	॥ ७० ॥
॥ ७१ ॥	॥ ७२ ॥	॥ ७३ ॥
॥ ७४ ॥	॥ ७५ ॥	॥ ७६ ॥
॥ ७७ ॥	॥ ७८ ॥	॥ ७९ ॥
॥ ८० ॥	॥ ८१ ॥	॥ ८२ ॥
॥ ८३ ॥	॥ ८४ ॥	॥ ८५ ॥
॥ ८६ ॥	॥ ८७ ॥	॥ ८८ ॥
॥ ८९ ॥	॥ ९० ॥	॥ ९१ ॥
॥ ९२ ॥	॥ ९३ ॥	॥ ९४ ॥
॥ ९५ ॥	॥ ९६ ॥	॥ ९७ ॥
॥ ९८ ॥	॥ ९९ ॥	॥ १०० ॥

४०

अद्ययसंलवाःताचयिदानःश्रीःसम्बवाया ॥	॥ १ ॥
प्रिमुलाःकनगिःउमनूयुरुसा	॥ २ ॥
रूःपाशयनयुवकसिचयवाया	॥ ३ ॥
लकताःखडमडाआरुनसवि	॥ ४ ॥
उचाययियाःवाद्यचर्मनिवासनककृतन ॥	॥ ५ ॥
॥ ६ ॥	॥ ७ ॥
॥ ८ ॥	॥ ९ ॥
॥ १० ॥	॥ ११ ॥
॥ १२ ॥	॥ १३ ॥
॥ १४ ॥	॥ १५ ॥
॥ १६ ॥	॥ १७ ॥
॥ १८ ॥	॥ १९ ॥
॥ २० ॥	॥ २१ ॥
॥ २२ ॥	॥ २३ ॥
॥ २४ ॥	॥ २५ ॥
॥ २६ ॥	॥ २७ ॥
॥ २८ ॥	॥ २९ ॥
॥ ३० ॥	॥ ३१ ॥
॥ ३२ ॥	॥ ३३ ॥
॥ ३४ ॥	॥ ३५ ॥
॥ ३६ ॥	॥ ३७ ॥
॥ ३८ ॥	॥ ३९ ॥
॥ ४० ॥	॥ ४१ ॥
॥ ४२ ॥	॥ ४३ ॥
॥ ४४ ॥	॥ ४५ ॥
॥ ४६ ॥	॥ ४७ ॥
॥ ४८ ॥	॥ ४९ ॥
॥ ५० ॥	॥ ५१ ॥
॥ ५२ ॥	॥ ५३ ॥
॥ ५४ ॥	॥ ५५ ॥
॥ ५६ ॥	॥ ५७ ॥
॥ ५८ ॥	॥ ५९ ॥
॥ ६० ॥	॥ ६१ ॥
॥ ६२ ॥	॥ ६३ ॥
॥ ६४ ॥	॥ ६५ ॥
॥ ६६ ॥	॥ ६७ ॥
॥ ६८ ॥	॥ ६९ ॥
॥ ७० ॥	॥ ७१ ॥
॥ ७२ ॥	॥ ७३ ॥
॥ ७४ ॥	॥ ७५ ॥
॥ ७६ ॥	॥ ७७ ॥
॥ ७८ ॥	॥ ७९ ॥
॥ ८० ॥	॥ ८१ ॥
॥ ८२ ॥	॥ ८३ ॥
॥ ८४ ॥	॥ ८५ ॥
॥ ८६ ॥	॥ ८७ ॥
॥ ८८ ॥	॥ ८९ ॥
॥ ९० ॥	॥ ९१ ॥
॥ ९२ ॥	॥ ९३ ॥
॥ ९४ ॥	॥ ९५ ॥
॥ ९६ ॥	॥ ९७ ॥
॥ ९८ ॥	॥ ९९ ॥
॥ १०० ॥	॥ १०१ ॥

संचनः दिवा च कृति निक नून दियारुक्त कृतमात्रु रुयाय सत्र नग
 डारियन मा दिव ऊ गीगा ॥
 यकिरिय निरुवंः साय दू काल
 यनिय साः धास्वसा नवनमरि
 दनाः दान इवाय ह साः दिव कं को धव किः धृग क न क म नः को ध न ऊ न

॥ इम क ॥ य स त्वा था यः नृय

नादिः तस्य विद्या या स्वाः यतिर

संसात्रा का न कालाः गुह विदुः

धृग क न क म नः को ध न ऊ न

४८

ग न्य म लु ले ॥

मामिदं ॥ गय म दिग य ॥ इम क ॥ नित्य ना क म त्र य त र्था सि न सि कू च र्थ
 रं व ल्कं ध मा रं व ऊा दि व ग या
 मो लिः वा ना र्का श्री क लु य न यी
 श्री स च न रु प्रि तु व न वि ऊ षू
 ला ग म ला उ ग न्य म लु म ल्यः व का न सं जा ना श दि तु ऊ न क म र्खः य थिः

मिय लि ग न सि व नः म्भ स्व मा लि

व त जि च ना ग य म र त्रियः या या

दा कि नि च कू व लि ॥ ५४ ॥

ला ग म ला उ ग न्य म लु म ल्यः व का न सं जा ना श दि तु ऊ न क म र्खः य थिः

१॥ निर्माणावृत्तः ॥

विदवा ॥ ॐ ॥ अक्षहिमदादवीः पृथिविमाणाः सर्वत्र तस्य पूर्णविशु
षिता ॥ ॥ यिनवर्धुसोम्यत्र
कसंगाजनि ॥ ॥ कनकवरे
मले शूरयः लाकसंगासनि ॥
रक्षाना निद्याखः वसुधात्राः ॥ ५३ ॥

विनिदवीः सर्वमहयकत्रः
दद्यत्रः वामकत्रः अत्रिः सर्वक
॥ दिव्यं कात्रः शुषिगददा
॥ रनागरुनवी ॥ निर्माणावृत्तः

४२

गायः गतकत्रसार्यवास्तवमयः यत्रियत्रिगात्र विविधमयगारिः यत्रय
ज्ञवालः निजवर्धुनऊमिग्रह
वजाचाकः मनु विन्यामिगः कर्म
वऊमिख्यालिमतः यत्रियर्धुद
लक्ष्म ॥ ॥ पूर्वदत्रगतयचः स्रष्टात्राः यत्रविगतिरुदितवृ

यिगा ॥ ॐ ॥ हूं हूं हूं कत्रहूं
वजिसादिगायस्तस्वयनीनी
पुनाः रुवसमदगत्रघाः यिमत्रद
यत्रविगतिरुदितवृ

द्वकार्यं श्रद्धा न दत्तं गतवजः स्वसमस्तत्रयाः पितृवनसमस्तत्रयाय विष्णु
 द्वं ॥ ॥ यश्चि सदनगतः संस्व
 लाङ्किता श्रद्धा न दत्तं गतवजः स्वसमस्तत्रयाय विष्णु
 विष्णु न नी ॥ ॥ अलम्
 स्याम वत्सु न जल्ला यियाय श्रद्धा विन्या शितः विष्णु मय यः किताः युनमा सिवज

५०

॥ यश्चि सदनगतः संस्व

सत्वसिन्धुसाधियनि ॥ ५० ॥ ॥ श्रद्धा न दत्तं गतवजः स्वसमस्तत्रयाय विष्णु
 द्वं श्रद्धा न दत्तं गतवजः स्वसमस्तत्रयाय विष्णु
 यनमा न दत्तं गतवजः स्वसमस्तत्रयाय विष्णु
 द्वं श्रद्धा न दत्तं गतवजः स्वसमस्तत्रयाय विष्णु
 द्वं श्रद्धा न दत्तं गतवजः स्वसमस्तत्रयाय विष्णु

वासाददिन ८॥

दिक्किनः यत्रियविष्टः कसलकूलिसयत्रिजामत्र ॥ ॥ कसमडदक
मकगः शासनिकमनाः जिनकून समयाज्वाक्ययदंरमनुकुल
वनः दय्यसेनेनदयः दमावनम नियदलासुत्रं ॥ ॥ तसामित्य
कसम्वनायगुनुवाकः इधधः त्रियाश्सगुनुवननः कसमय
सादः अनूरुनसिद्धियदायकं ॥ ५८ ॥ ॥ शत्रागः मानसि ॥ वासाददी

५९

नः नडियिद्यत्रही शसाम्यवित्रामायिः महासुलयिया ॥ ५९ ॥ युजयियात्रः
जात्रयियाः सदकानन्दं शसयत्राः वित्रायत्रानयत्रिलाव ॥
गयनमयनः चिरुवित्रासाहका यवाकचिरुः नकुकत्रिया ॥
नकधवयीः आहूत्रयियाश्चा आयित्रयातीः गायधानी ॥
॥ यावयिवगुनः पाययसादंरुनयिवाकवजः गुनसमाधि ॥ ५९ ॥

८४ नक्षत्र ॥

रत्नागविलास ॥ धन धनः इधनः धनयश्चक्रिणी ॥ मर्द्धश्चक्रधकसमनः क
इन्ध्यागमस्रविनवन ॥ ५२ ॥ क
ककह्विन ॥ ॥ कृष्णनिशंक
न ॥ ॥ मालवतिश्रुतावयल
नदीश्चित्तकिसगगाशकायानिवन्धनत्राचकवन ॥ ॥ कृष्णयज्ञधक

५२

८५ नक्षत्र ॥

सुगताश्मस्वनमंदिगयनवमस्व ॥ ॥ कृष्णदृष्टादिनचननवन
युधमासिस्रनवकभिनी ॥ ५० ॥
सायनः तननिनकियः सिनवा
आरुप्रकाकिमिपुशसयनाः न
वीकयिपुलियकिमिपुशसजकि कसत्रिनाश्चदिनआलिहसहवन

॥ कृष्णदृष्टादिनचननवन
॥ ॥ रत्नागलत्रिना ॥ स्वदम
सानाथिनात्राऊनदायाश्चक
यावमितमृगिहाजा ॥ ५१ ॥ द
॥ कृष्णयज्ञधक

सिविकगालगितिनयनमृगिलानूवा ॥ मिहसुहसुलःसाम
 वमिनवतायाःअङ्कुलधनगिः नयावकयाश्कगतिवयनःख
 लोमनकदायःयश्मिन्नरुग मकूठकमकयालं ॥ गायत्र
 गथागतददसिचनदवीजः कदिनाथदवीजःयावनिजयं
 रजगतमानमिनाधिःसयत्रजगमाता नहिस्थमायिकदिनायुषं ॥

ॐ

हवदाषरितमगितिनयसुनगवजःकयिस्थजानूदवीयःगुन्यसा
 यश्चययिकलिकिंपीनदी सङ्गनाथरावज्जरावदिर्यं ॥
 ३१ ॥ ॥रागगादि॥स यतिमहिगःमधुत्रचक्रंरुडदी
 गुरुयगाकवितान ॥ ॥ ॥सयकिनादिगःगुङ्गमलकंरु
 दन्चगीगवयःनसनाहं ॥ ॥यंकेवज्ञात्मकःसर्वज्ञज्ञायंश्य
 ॥क॥कदागात्रहृदंनयुःतिउवननःप्रामितामिजनाःचक्रस्वस्तिमान्

स्वपतिमहिग ॥

आनविषयानाक्रानितका

दयः नृपाद्या न च धर्मनाम न गयामुयायिभः विश्वमनुलवे कमाकत्रयनः वतकि न
 कृनाडकृचिपूकृनदिव्यां ॥ जागादियकृमदासुदनामानृत्यः ॥
 गुगितवलकनसर्न ॥ ॥ अ ॥ वकयानतः सिकृतारिद्वार्यं ॥
 मागयनिं अथः गताचत्रिचन ॥ ॥ वृद्धचत्रिचनः वृद्धगुल ॥
 संश्रुपकृदिनादः रिद्वार्यं स्वय ॥ ॥ वृद्धचत्रिचनः वृद्धगुल ॥
 निमृष्टगः गतावृद्धं वृद्धविरावनयावियत्रिगः मिदसकत्रलाय ॥

का
 न्य
 सि ४॥
 जं ४

॥ गताहं हं गताहं हं गताहं हं हं ॥ ३२ ॥ ॥ रत्रागवसंन ॥
 कायिनेवंमाः वाकित्रविनाश
 ॥ ५ ॥ ॥ अत्ररुमयूजिलः दान
 लादियसाय ॥ ॥ गगगग
 त्रविमासि गगइलाज ॥ ॥ डयलालचंदात्रविजबूलाशमममस्यस

॥ ५ ॥ ॥ अत्ररुमयूजिलः दान

संस्कृतसंग्रहः ॥

लमाभ्यः यवनदिदात्र ॥ ॥ यवनयचानः नकु कनवंधरवियनि
नवम्यः दालकसिद्धा ॥ ३३ ॥ ॥ श्यागनाग ॥ सहजसना
रुः दनवनाया ॥ यिगुवननाथय
सगुष्कारिखक ॥ कसमनकुनि
यीतीः विम्ब व्यापिनी ॥ किन्दगिननामहासुखदागा ॥ ॥ उद्गाटाव

जंज

संस्कृतसंग्रहः ॥

दनठिन्रधियायवस्यश्यानविन्दुलसमहासुखनाया ॥ ॥ गुन
यमदः गुनरुनकुया ॥ ददी
॥ ३३ ॥ ॥ श्यागगंधा
मनिरुखनचनमयग ॥ ॥ ॥
मयदं ॥ ॥ गमदसुनिवदुयिथिसः कथकटददधन ॥ ॥ वात्रिगुरु

नविमभीकूं विरु दावयिः उं कावनादवृणीरुं नृवृका लघः विरुवदः
 लिनाः ययिसयिः किममभीः वि नृवृयं ॥ ५ ॥ यत्रमजानन्यः म
 नृगिनृयध्विश्काधधियधी मरुं वजाश्रुं आ हूं हूं हूं उं आ जं ८
 हूं हूं हूं काधधियधी मरुं व जा ॥ ॥ कूलिगकमलसंजा
 नः सदज्ञानन्यः यवनननगसु विनगाविश्कियमस्वषट्शुजः वलम

कूटमोत्रीः कूष्मीगानः ददिनवाभा ॥ ॥ ॐ नृमधुलनायलिः वज
 यज्ञवाः कूं कूमा नृनृनृनृयक लिनाश्चवजस्वमसत्रः ददिध
 कनध्विः वामयं अत्यलचा यध्वि ॥ ॥ विविरुवला
 आरुनमः विरुषितः स्रुलयी अनकमनृगिनृयं श्रमनगुनृय
 वधः कमनृयसादाः नमा मिश्चनमानियायदं ॥ ३ ॥ ॥ नगमो

का. ग. ००२४॥

दि॥ का. ग. यि. प्र. थि. या. वा. ना. म. म. नि. ल. क. र्ह. का. ग. रा. य. न. क. यि. थि. दा. यी.
व. ऊ. यि. क. नू. ल. कि. या. यि. न. ला.
ऊ. यि. १. ति. दि. मा. का. दि. ना. न. व.
न. ग. म. ध. म. य. ना. यि. व. ऊ. न. या. यी.
व. नू. व. ऊ. न. या. यि. ॥ ॥ च. ड. स. म. य. क. मु. लि. शि. ना. क. य. न. ला. य. य. न. या.

ऊं ले

से. व. वे. ४॥

यि. १. म. न. व. ऊ. ध. न. सा. नि. ऊ. नू. ग. दि. रु. न. खा. ऊ. न. या. यि. ॥ ॥ यु. स्व. म. म.
ग. रू. क. न. क. शु. क्का. स. र्द्ध. न. न. म.
यि. ग. दि. ऊ. म. ना. य. न. या. यि.
लि. ॥ स. र्ध. व. र्द्ध. मं. धि. ग. वि. म्भ. मा. न.
धि. ग. का. न. ध. न. सि. यि. नि. ला. च. ना. ॥ ॥ न. मा. मि. वा. रू. लि. सि. धि. या. मि. नी. ग. न.

॥ ३६ ॥

॥ र. ना. ग. न. वा. व.

कविगुक्तित्रयानि ॥ श्रीवज्रसत्त्वः आवाधियात्रः अनूर्कप्रसिद्धियत्रमा
 क्रूरप्रदं ॥ १ ॥ याम्ययुक्तक
 हेतव्ययुक्तनित्रयश्चयत्राकि
 सुगमः व्यातकत्रयं ॥ २ ॥ यश्चि
 त्रयिहवनः हृक्शालिगिताश्चयत्राकदधुवत्रः वित्रविक्रमः तागादिइ

३९

सुगमः व्यातकत्रयं ॥ ३ ॥ उरुत्रविश्रातकः मंत्रकसद्वननः वृककठासंय
 तः गद्वत्रयमभा मंत्रविश्ववक्ति
 मनव्यातकत्रयं ॥ ४ ॥ ददन्य
 वीसंयत्रवज्रदहृश्चयत्राद्वयम
 तः व्यातकत्रयं ॥ ५ ॥ नैमत्यनिलदधुः नित्रसद्वननः वज्रसिंखलासंयत्रवज्र

मंदननः वक्रगन्धारीसंपूर्ण
 स्मृतिः वागादिद्रुगधः द्याव
 लारुः मंदननः पाण्डुगवलिमंय
 नायिरुवतः ॐ आदिद्रुगधद्या

टकत्रयं॥ ८ ॥ उर्ध्व उर्ध्वीयचक्रः स्वगसंदननः सहायगिसत्रासंयुट
 चक्रद्वयं शक्रचक्रविविधः विवर्धसगधः वस्त्रादिद्रव्य
 धः घाटकत्रयं॥ ९ ॥ ऊर्ध्व
 स्फुलिनीसयुतः वक्रद्वयं शक्र
 हास्त्रादिद्रव्यगधः घाटकलक्ष्मी॥ १० ॥ त्रिभुवनकस्थितकालिगह्वका

२५॥ १॥ १॥

ननिनददाशयमसामीदमकाधवाकं सर्वसयगि कनं साकुरुनदं ॥

१० ॥ १॥ १॥ १॥

कात्रारवः सात्रालियुष्टदनः

महाकाधवायाः जल्योयविः

स्वदयः सर्वदृष्टः कित्रयहंरुः यायदयः हंवेज किलयप्रकलवि

१॥ १॥ १॥ १॥

अचनविलंरुत्रयिजनक

प्रसमदय ॥ १॥ १॥ १॥ १॥

१॥ १॥ १॥ १॥

३३

नजाह्लाः कायवाकचि न कित्रयगि रशीचवृवीन जात्राधियात्रः अन

हंमसिद्वियदसा कुरुनदं ॥

कंदइवन्हाकाधत्रयंरुवेला

यतिगनजायकि ॥ ३ ॥ १॥ १॥

वर्षगहनरिमत्रयंरुमदिस्वासनः महात्रुः नित्रवन्हात्रः इगयनवा

१ ॥ १॥ १॥ १॥

वनात्रुसदसगयनं दवाधि

नादिनाचत्रमहावित्रः कर्नकः

१॥ १॥ १॥ १॥

ॐ मर्दयग ॥ ४ ॥ यन्मि मन्त्रकाचनः महाविनः प्रक वल्ह स्व प्रयाग
 धर्मे मकलासनस्थः नमिातद
 ॥ ५ ॥ ॥ इह नम्यासाचनः महा
 यंशुनंगमसनस्थः यितवल्हः
 ॥ दददावत्रकोन्यदवीसादवजिः कूचद्वल्हकप्रियाणधारीश्च

दः ज्ञायाधियमिगतकिप्रयमि
 काध्याः म्मावल्हगनू विकगनू
 ऊदनाटगामतकुयकि ॥ ३

ॐ ४

गसनमहाप्रदध्ववधालिः ददनधियमिगदाकिप्रयकि ॥ १ ॥ नेसत्य
 काहादवीः यिधुनवजि कनक
 हाहिमः स्वप्रयाणधनाः कव
 वायवाकाहादवीः नागवजिली
 गसनवायुनाकाधत्रः स्वसहधियमिः किप्रयमि ॥ २ ॥ म्मन्त्रव

वल्हः गव्यायप्रयिरननासनम
 नाधियमिः मदयकि ॥ ३ ॥
 दिगवल्हः कलिपाटधात्रिशम

त्रकाहादवीः ॐ स्वावकिः ॥ ममवर्हः ननुकाधवदनि २ विश्वासन गिनयः
 नत्रिसुलधात्रिः रुगाधियनिस
 शितचनुलाखनः सयवुक्ताद्यु
 मयुसयत्रश्वः चलिमात्रगधसं
 मानयनः चनुलाखनसयत्रमात्रयात्रयंकि २ यिथिवि ३ सुत्रगधहा

दाव ॥ १० ॥ ददिनमयमडईव
 पात्रयंकि २ वुक्तात्रविममिगद
 यश्रीमा ॥ ११ ॥ कामाददसितवा

३५

षनागादिसुयत्रः रुचयीमात्रगधनासुकर ॥ १२ ॥ दहादिहदाहहं
 कात्रसंरुवाः युनमामिथीचंनु
 त्रः दानयनित्रः सर्वविश्रानि
 ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ गहरेववी
 मिषयादयः सितां गहरेववाश्वुक्तायनियिताः वाहृकिनामः चधुगहिवनः

महालाखनं २ आसायत्रियूल
 वात्रनिसिद्धिरुलदं ॥ ॥ ॥
 ॥ अकात्रमजानः यितीवन ॐ ॥

अकात्रसंजाग ॥

युनितऊत्रदा॥ ६ ॥ डंगलयतिकूमात्रमदाकालक्षययात्रयागिनीग
 मा२मयसांसमत्स्ययंचविधंय
 १ ॥ यवर्गजातःनादिगत्रयन
 वृद्धायतिश्वनाःगककनागःगक
 २ ॥ यवर्गजातःविहात्रववृद्धःअश्वकयादःयत्रहंनवा२००॥

ऊनःगृह्णुस्वादंनुयितंनु॥
 दःयिष्यत्रयादःयत्रहंनवा२
 सत्रवात्रयःयुनितऊत्रदा॥

उंउं

युनिकूंकुमःककनकनागःकालांकलाःनादीतऊत्रजा॥ ३ ॥ चतुर्व
 र्गजातःयवर्गसमनेचतयादय
 माहुऊरुमःकनकहंनवाःवलीऊ
 काएनोःकनकीयादयःकायुहं
 अद्रुगहा॥यचतुऊलदा॥ ५ ॥

कयिचहंनवा२वावादित्रकाःय
 त्रदा॥ ४ ॥ कर्चर्गजातःएकवृ
 लवा२कूमालित्रकाःमहायमा
 ॥ ६ ॥ कर्चर्गजातःमाएगृहद्वितिकूयः

कटिपादयः ड नमरुतं नवाश्वे वृविस्वमाः जूनकनागाः लक्ष्मि वदनाद्रु
 नासनकुलदा ॥ ३ ॥ यवर्गः
 दयः संदात्ररुतं नवाश्वामदामकाः
 रुकजवदा ॥ ४ ॥ भावर्गज
 यः रुखनरुतं नवाश्वमहालक्ष्मि वदनाः भंस्वयात्रनागाः किलिकिला

ॐ

वाः वरुनकुलदा ॥ ५ ॥ रुतवकालिः पादरुतः द्वादशचलनं ज
 लिचलनं श्वदवदनं नवि
 वरुयदल्लं ॥ ६ ॥ **आका**
रुवी ॥ गियनिसनाथाकियां
 हानादिगित्य ॥ ७ ॥ **खचिकमाजा** लघयजुधूनाश्वमनदिवात्रया

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

त्रसिचकननं॥ २ ॥ ऊं स्वरुवनं स्वरः तनितुं स्रक्ति २ अरु काधवाय
 नृद्वदनकननं॥ ३ ॥ यन्यज मवाजाः अरु कननामय २ द
 म्भुजदिदुः अस्मिचन्ददास ॥ ४ ॥ डनमाधियगिः यवाय
 कुसद २ वद्वयाभवाकुघाटन कननं॥ ५ ॥ ससिचमनाथः
 स्रुगगदुगथानश्रुगगकगिथंनुः अरुनादिदाय ॥ ६ ॥ ऊं दगनवाजा

ॐ

गद्यनकायत्रिनाथद्वतवज्जुहः वन्धनकननं॥ ७ ॥ त्रुगलसत्रन
 वविद्यकुरुसक्ति २ नाथस्रु
 अद्वाधनुवनाथः वक्रायिति यनुः नडिवनियुय ॥ ८ ॥
 ससिचकननं॥ ९ ॥ वृद्ध विल्याश्चगमाधुविध्वंकिरु
 मादिगारिगमात्रः शासनकननं॥ १० ॥ वाद्यनीचलनीः रुद्रवागध

उरुलविनवि कुमवकुम साकाधालेदमादिगः ३ न्यतांरावकवृक्ष	ककाधियतिगधः संपासकन
रगदात्रसाधनः अतिदात्रनः	उदिकयः हंकात्रकीलनद
नी ॥ ४ ॥ विदिगवृक्षानः व	समभनः मदारु मित्ररंताधिति
सादिगस्सुलनं २ अगदूदास	यतिगनलीखयं ॥ ५ ॥ मयचनादमादाः वजकाधामादाविनाः दादादूदास

नं०

अतिहिमतादं २ ददनाधियतिः सगतयविदामाः सर्वमात्रात्रिनसृष्टासयंति ॥	माद्यनयात्रगकनास्सुतयाषर
३ ॥ काधमदोदत्रः वजविक	दयंमादास्सुलिनयिर्हं ॥
अस्रनालिदूदूलः मालात्रिह	दत्रयः रुवरुयवादनः सर्वसु
न ॥ अयवंककाध अगिलीः	स्वदं २ अतिनाधिलाकलेः मालात्रिहं दूकुलेदूदोमायायविष्टुदनन

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ८ ॥ उद्धृष्य च कुर्वतिः उद्धृष्टा विद्युदाकाशसूत्रकिर्तने रदवा
दिसममयलिवालालयर्थः सा
रमाकवकतादाविद्याः यामात्रवा
प्रयः दानयतिलः सर्वसयकत्र
॥ ॥ रमागमलिवीत ॥ मून्यनित्रं ऊहाः यत्र सपुत्रुः सूनमायमीयुदर

मालयद्रुसंचिह्नित ॥ ९ ॥ स
सितः मात्रद्वनं रजासायलिय
माकृष्टलदं ॥ १० ॥

११

रावद्वियः संदावजः नानासिमायिकावू ॥ ११ ॥ नवूरुनवनिर्वाहगदिः
द्रुम्यमसुहवकं रऊरुप्लयिम
॥ १२ ॥ अखालमकविक्रियाः
दाशुहः नाहदिनाचिरु ॥ १३ ॥
यिमनरावद्वसूत्रनित्रं ऊहाः यत्र सपुत्रुः सूनमायमीयुदर

नरावगच्छः स्वयत्रसायिकर्क
नासाविद्रुनचिरुद्वसूत्रमम
द्रिमयदिविद्रुसंदावजः निनिराव
॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥

१५३ दि गी य कि ४॥

ऊलमकचलुसदिः नासाखरुनमिहृयिश् विमिसामधुलचकाजः गनय
संसावः खरुसर्षी ॥ १५ ॥
निः श्रुतिनित्रवर्धुश्चयचयुगा
वाधियनिः दनित्रवर्धुश्चयुगा
२ ॥ यन्नगाधियनिः लाकालवर्धुश्चयुगा
॥ १५ गुरुनदी ॥ पूर्वदिगीय
माहाः काकवदनी ॥ १ ॥ डरु
नूकाननरिमः ऊरु रुयदलदी ॥
२ ॥ यन्नगाधियनिः लाकालवर्धुश्चयुगा
॥ १५ गुरुनदी ॥ पूर्वदिगीय

१२

यमनिद्यानः लोत्रवर्धुश्चयुगा
ऊययनिः नित्रयिगाकाश्चवनि
५ ॥ ऊलुखनचलः नाग्र
त्रवदनी ॥ ३ ॥ मानूगाधिय
सर्षी डरुकावदनी ॥ १ ॥ रुकाधियनिः निरुतकवर्धुश्चयुगा
॥ १५ गुरुनदी ॥ पूर्वदिगीय
रुयवदनीः मरुकाधवदनी
दुवर्धुश्चयुगा नूतवर्धुः कला
निः लादिगम्भमाश्चयुगा निन
॥ १५ गुरुनदी ॥ पूर्वदिगीय

॥४५५५५५॥

नं: दनिगनिल्लाहा ॥ ८ ॥ द्वादशावित्रं: महाकायवदनं: जाकि न्यांद	युग्माद: गभवनि यिगी गभी क
वीआलिङ्गक्षरणी चकसम्वन	गममाभिादिरुज्जकमस्वत्रक
लिङ्गा ॥ नं ३ ॥ ॥१२३३३॥	कु ॥ गता हूं हूं रतना गतं हूं हूं हूं
वर्णरमकूठकशादिगंवना ॥	॥ शु
॥ वृक्षकनाठक: द दिनकन गिरहाउ आरवनससारिता ॥	

नं ३

॥४५५५५५॥

ऊं मधुलमायगा दनसत्र गिरवऊ मधुली गयुसारिता ॥ ॥ सगगु	
वृचवधसिलंगगधत्रियाश्व	ऊवादिगुंरुसिल्यधना ॥
नं ३ ॥ ॥१२३३३॥	राखत्रस्वभीमस्व: वऊचिरु
य: धर्मादयायत्रिगु मित्रश्व	ठागात्रमनादत्र: मंशुवजा:
धागुदियकमलवत्र ॥ कु ॥ इटरावकुन: ददयकमत्राधियच	

कलेश्चास्ति सिद्धि वत्र विद्युत विना सतः क्षयी प्रमदा मदा सिद्धि ॥
 ॥ जादिवृद्ध दियमास धल मधुलः विनासयि स्ववचक ॥
 शनिवतिलवर्णसूत्र किमधी मनुः मन्त्रा यनः यत्रिमत्र ॥
 ॥ यसात्रिप्रददादिद्वंद्वं प्रगाह्य वज्रगगडधनमंशस
 यवृद्ध जिनः प्रक कप्रियाः निऊरुवादि ययात्रि रायत्र ॥ ॥ ग
 ॥

०४

नृपैते दमः सिद्धि यिपूज्यः साकृत् विरु विरु गत्र शसत गुवचत्रमसि
 प्रगमध्वनीयाः रुनयि सूत्रगवः ऊः तत्त्वत्र ॥ नंद ॥ ॥ ॥
 गर्गधरववि ॥ शिदत्रयमत्रगु कमलः मदागूयकत्र शदवीव
 ऊविनासितिः नगाह्वानवक ॥ ॥ यिवयिप्रमदात्रसल्लभक
 दहन शस्त्रगर्माक मागसुखडधनार्थ ॥ ॥ वज्रवादि अहिमनु

शिदत्रयमत्रगु ॥

८५ दिना ८॥

प्रगमनश्चिरवनदवास्तनलदवी॥

रुत्रकीश्चलनत्रचिर्कः नगकिया

निनामानश्चनयिकूत्रदंक आवा

विरास॥ ८५ दिनात्रयियायवनव

५॥ ८५ दिनात्रयियायवनव

॥यजायुक्कुशास्त्रिककजून

समवय॥ ॥गुत्रयसादनइर्ग

कुचविना॥ ॥नैत॥ ॥श्वाग

माश्चवसुददामककासत्रगा॥

॥दिनत्र

गंजं

८६ दिना ८॥

मधुलमधुनाश्चकत्रुष्ममगत्रसंसवलकुगा॥

यकिनिदगाश्चदवजुसत्रनत्र

यवनयत्रिगुत्रुवगाश्चक

॥ ८६० ॥ ॥श्वाग

नरावकश्चनचविसुदनचयाननगार्कदे॥ ५॥

॥दग्धजुलिरय

सिचनमिगा॥ ॥गम्वकि

वात्रादिपुरुमिचंनमिगा॥

विरास॥यदमगादिनचराव

॥सामनखनिकवि

न २ अष्टममहानः दूषितां वि

रुट्कं च कः कं नं रं नाना विदा नः ॥ यो यम सदा वलि यका ॥ ॥ स
 मयो न दं दुः का गो व न द वा र ॥ वा हुं न वा हुं लः च ड म ह न
 यना ॥ ॥ मि न यः क नं क ॥ कृ णा वलि श्व रा र यू षि क नं
 कः स मा कू न व य न ॥ ॥ यो यम सदा वलिः य रु व न ग य
 न र स य मा सः म रु नू धि न आ हा ल ॥ ८३ ॥ ॥ र वा ग न लि न ॥

॥ ८३ ॥

॥ ८३ ॥

वि श्व य वि श्व य वि नू य व न सं का ग्यः ऊ न यि चं दा नि नि ना रि क मः
 न र द द यि कि न वि नू म मिः ॥ अ द यि स र ग व रु कि नि आ रा
 स वि स्था म स य नं ॥ ६ ॥ न मी ॥ मं ई या स्वं का न च कः द व रु स
 त्व न वि श्व नू यं र य वि य दू म ॥ सं का लः सं कृ व नि स य नः स रु
 ऊ आ न न द म य ह न नू यं ॥ ॥ व रु य रु का स रु कू म नू न रु नः ना म स

गिगीज्जुकाख्यकानंरुगगद्वनासनंवाधिरुलदायकंःऊनधर्म
 मावृणवलिष्ठा॥ ॥युववा
 चियःसमिमकूठचंदनडगा
 त्रिनयनस्यस्वप्नसूर्यरुवनस्य
 प्रसायासृष्टःरावयत्रिरादनाःवृधर्म्मसंघसन्ननागमियाशुन

कःइहधत्रियाःऊर्द्धयवनकं
 दिधत्रियाश्चडचक्रयाशस
 श्रीःवाजादशुवनं॥ ॥म्य

नंते

वनसिधधत्रियाःगाडातिसूत्रतवजःऊल्लऊल्लमावृल्लवृद्धसन्नं
 ॥८४॥ ॥र्यागगवदमी
 कायिसृष्टयरादःमलुलना
 ऊगगनिवासियात्र॥रुमक॥
 थागगात्रयःसुधधर्म्ममनेनासादसमलुलंमरुसं॥ ॥अमियज

८५ विनिमनवरा८॥

मियः निजजनदस्य २ सदृजसुन्दरिनेयाः किनदूत्रययिष्य ॥

द ॥ सर्वत्रथं सयूक्तसर्वीत्रमं वि
था खमधुलं मृगमं ॥ ॥

वज्रवायादि आलिगनदला

नचर्या विस्वधकं समंकरुडवाचागं राखमधुलं मृकमं ॥ ॥

वाकिगं समंकरुडकायागं

वचवकागिनीयत्रमत्रमत्रा ८०

॥ य ॥ सातधर्मागसंभुनंझ

॥

उथरुयादाः कचमकवात्रिशुय आलिगनः नित्रावर्धुवात्रि ॥ ३ ॥

॥ सर्वसुखमहाचिन्तं गुडय

लायः ॥ राखमधुलं सत्रथ

नाथयदः सर्वननादिनाः विला

पूकानादिषा ॥ ऊरुचर्कयलिवरुतः किनगुहासुनदयमादृष्टः ऊस्यातस

कलिनिर्मनः समंकरुडवि

॥ एमकासंयुक्तं सर्वजगत्स

सर्वविल्यामादकचनः दाकिनिद

॥ वरुण क म म ॥ १ ॥

कृपायुत्रहस्यमनसानृत्यंयमंसयन॥८५॥ ॥ रागमवाउ॥ वि
स्वकमवायत्रिःविधुविस्वाशुं
कु ॥ नमामिऊंरुवताथव
त्रिगत्रकवलादिदहिम॥
द्विगुऊवकमस्वउत्यलमंडलीहारिता॥ ॥ सूर्यकवमविः

८९

॥ वरुण क म म ॥ १ ॥

विजयत्रकंरुवसवंकनःवकुलिखरिता॥ ॥ याचादिदीगिर्यमा
मिरुजागिरस्वस्ववभूतिगऊरुः
रागमवाउ॥ वृद्धकागम्वनःसिहा
नवदन॥ कु ॥ नमामिऊंरुवताथव
त्रिगत्रकवलादिदहिम॥ ॥ ददिनकवनमनःवामवनरुमात्रिशूचयववऊ

८९

॥ ४५ ॥

बहुउवावा ॥	॥ वज्रजाकिनिधायडाकिनीश्वरात्रजाकिनिःचः
दात्रजाकिनि ॥	॥ सिधिनी
जाकिनिदियिनिःचडसिकवा	याधिनिःकम्बुकडवाकिनीश
वृज्जसूत्रनत्रश्रीकगाम्बल	कानि ॥ ॥ द्वात्रिदत्रवृक्तं ॥ ८२ ॥
रागत्रालिग ॥ अयविद्याठकः	वदिगत्रवृक्तं ॥ ८३ ॥
	कात्रसजागरगजमस्वगद्ययिजा

लिधयदल्ल ॥	॥ नमासिनुकमस्वकाधवायाश्ववकनीयव
विगत्रकं ॥	॥ वट
मल्लवास्यागश्वर्वागधवा ॥	॥ मद्रमालवायुचर्मल
यादवाश्वदमादिगमात्रविध	सनविवा ॥ ॥ सिद्धिसिधी
वत्रविद्यतविनासनशमर्वति	कात्रवज्रगीता ॥ ८४ ॥ ॥ श्वा

८५ गत्र का ४॥

गमनाद॥ यागत्रकानगत्रज्जाधियात्रशसिद्धाकागिर्वधूदहनलंदद
व॥ ६॥ नमामिशीलाकख
यज्जगदध्यात्रिया॥ ॥ हवि
नैनोऊदगधर्वदिगचनन॥
श्याधियात्रिदइमद्वध॥ ॥ सुखावगिधुवनधर्मसुखदश्लोक

६३

८५ गमि श्याह्वनक ४॥

खनऊलऊलमत्रध॥ ८॥ ॥
हनूकविनाःचनुस्यखनविः
यात्रलंककःसाहिनगमीखनित्र
सयत्रवियायितःकनूधनयः
नमामिशगऊचमिविधुविताःयायचमिखउमडाशमधालिगध

॥ यागरेववि॥ नमामिश्या
खकविनाऊठाशयचवकक
गन॥ ६॥ गनाऊं गनाऊं
सलूडधाननशीसुखया॥

कयाशयत्रः इदं न इष्टु चित्तं न कचर्षं ॥ ॥ अतिशय स्वनादिकः ॥
 इष्टु यकचः प्रितीयाचननेलाक ॥ कचर्षं इष्टु स्वनेयदात्रमाल
 वंरः दमादिगमात्रसगानक ॥ चर्षं ॥ ॥ यंचनथगगरुय
 नसहल्लक्षः विष्टु विष्टं नः ॥ चर्षवीत्रा अतिमध्ययत्रमादि
 वरुसत्रनागतः रुनायियत्रमादिवरुयुत्रुसत्रनं ॥ ११ ॥ ॥

ॐ

ॐ

रनागल्लक्षणी ॥ वासस्वत्यत्रयत्रः ददिनकचर्षि शयायत्रक्ष डत्रलडमा
 नकुषिणा ॥ ११ ॥ दवीनाचयिण
 दवीः प्रिष्टुवनययिण ॥ ॥
 शनागहं स्वमादकचर्षिनष्टुदी
 जनदवी शम्लयणदवीरु नकुषावा ॥ ॥ मृष्टि सं दानलायाः क

पु. ४८॥

ऊ. ऊ. लने नुदुग्ग म म व ध स प्र म ग ति ॥ ले ३ ॥

॥ रा ग म पा उ ॥ वृ का प्रः

सं जा नः प्र त्रि मा स न र ह श क न क

व र्ध न व व क ख ट रु ज ॥ वृ

न मा मि ऊ न नि द वी यी व स र वा प्र

श र त्त म कू ट आ र प्र ध रु सि का

॥ ॥ वा म गु र ड द व न मः

ऊ त्रि या श्व सु या त्र मि ता य रूः

क धा त्रि मा ॥

॥ ना ना वा धि त्रि य द्वा त्रि द द व ना श दि व ध व क र ॥

८०

पु. ४८॥

प्र त्ना दि द हि म मा प्र ॥ ले ४ ॥

॥ रा ग म पा उ ॥ गु र्ध म धु ल म म

दि रु ऊ ल क म र व श न ग न म कू

ट क म वि नि त य ना ॥ वृ ॥ न

मा मि यी वृ द्ध ता कि ती वि रु वः

न र्व त्री रू म दि सि दि द वी मा

द य सा य ॥ ॥ द दि न कू

लि मः वा म क प्र ख य न र क

पू यि द वी म म न वा मि ती म

॥ व र्ध य त्रि नि वा सि त ड दि

॥ ४ ॥

गाथा लिङ्गिग गुङ्गा गुचकुरुकः ऊर्गाई वृथुश्च वद्धः सा नालं रुगा ॥
॥ चवृ विंशती नश्च त्रय च न्मु
यानरिह गा ररुणी मवी नदवी
लिगनीलयमा दोग ॥ ७३ ॥
त्रय रूग गुङ्गा कनध त्रयिः चकसा वन्धू यत्र कुल जयन श्रय रू लि

८७

यादिन मा मि साय त्रगा त्र मरु कथिन रूग जालि रय दं ॥ ७४ ॥
आ ४ डं आ ४ रू आ ४ रू ३ ॥ मरु
हा या का नय स सा रू क नं रद
न र्यं व क री ख न ली य र मरु
त्रा मरि ख हा ख त्र सा दि य ना द व लं र कालिग कू लि म द्य मरु ड ग त्र दि

॥ ८ ॥

उक्तः दत्तः आलिगधनीनविर्यं ॥

यनादकत्रंगनसमल्लयुवत्र

सखत्रः अनित्रगत्रगधालितः

रुत्रवी ॥ दवदिगं वत्रः धवत्र

नावयिसमयुक्तः नयधत्रन्य ॥ १ ॥ वकालित्राणी गलवाययियुध

॥ समल्लस्रसदासदवाचिः

अवधूवययिसयिसदङ्गभी

गति ॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

कित्राटिगजचर्मविरुषिकः

॥ १ ॥

मामिहं हं कात्रा ॥

लजल्लयुक्तसत्रधगति ॥

रयमिवः कत्रकलं लः सदङ्ग

तिः युधसत्रित्रा १ ॥ १ ॥ १ ॥

मामिहं हं कात्रा ॥

॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

गुनल्यका नीत्रयज्ञानन्यसत्र

नः रुवद्र १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

वसक विषयः यत्र ह्यनप्रिय कायचक्रवर्तिश्च दमस्कृत्य विद्युः
 विना सत युधमा मिहं कृका
 मालोली विरः धनधनं लय न
 दृष्टीमतवदसल्ययनमध्वन
 ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥

कार्त्तेशसर्वनिग्रयनिग्रजनयक्तिवक्तिमङ्गलचन्द्रमात्र॥	॥ शुद्धकुवज
कवालिमयिवाविहादियवलि	यात्रयत्रमियत्रसकृलिमाड
लाजाहासकूदहनयत्रसाल	॥ ॐ श्री हं हं हं क विद्या
वियममयनूयीधिश्चत्रल	हृलसमंदात्रः शुद्धयमा
त्रकूरुनि॥	॥ ॐ न्ययमङ्गलयंदात्रः शुद्धयवाक्तिवायुनादात्र

१३६३३३

श्वेतसूर्य इयिवाधलः नात्रपातन अष्टनामा ॥ ॥ ॐ नुवलीतुं
इति यात्रा न ध्यमांसः सा दियान् श्रद्धा निद्रुत्य नृगमः
धात्रेयानपानि सर्वकार्यसिद्धि ॥ ॥ कर्णयात्रि अष्टिष्टामा ॥ २
लवालीचवृत्त्यरुक्तात्रा जादानपानि सरु लिवात्रात्रा
यत्र सखे ग्रीवा ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ विष्णुमहादेवसुखी

नः मंशुग्रावजयर्थं कचवुवका शयिग नित्रत्रक सिनवर्द्ध यत्रावद्ध
मकूतधना ॥ ॥ नमा मिश्रवा गीश्वत्राय धर्मधाम गुप्तलुलहि
ताश्चदवदवाधिद्वेनयकिता खखवाद्य सिद्धियुग्मादा ॥
युयमयातिधमाचकुम्भदाहि नित्यकृपानयूरुकारुहिनियद
स्तिवातवायधना चतुर्थवज्रयष्टिधात्री ॥ ॥ युनमयर्मधामुमश्रु

गायं न युग्मदा संवा धि पा फा र ह न यि धी मि व व ऊ च त्रि नाः ऊ ल ऊ ल
 पु रु स त्र ण ॥ १०० ॥ ॥ न
 त्र सं र व यु य मू खः षट् शु ऊ च
 न व र्ण य रि व कु ति ति त्रा च ना
 ऊ ग न इ रु ग ऊ च व वि ता म न यु त सा मि व ऊ स व र्ण ती र य श्री म गा व

ॐ

द्वि दाय नाः नो मी ति वृ ह्म सं य दा न ना हूं हूं ॥ ॥ न सा मि र श्री व क कम
 ल ध ना रु ल्या न क टि स र्व क ल
 वा स व ल च क धा त्रि ना ॥ ॥
 नाः च द्या स न वि र्व द्या यि ना र
 क ना क स र्व दाय नि ॥ ॥ न सा मि र य त्या लि धा धि ना व ऊ व रि द ह

ॐ नमः ॥

यनाशविमिधिरत्नारुद्रममिधिरत्नमामुश्वजसन्मयगी॥ १०१ ॥	
॥ ॥ रागावसंत ॥ कर्क	वर्षगन्द्वादमयुजवन्त
चउमस्वचननरेनवकागी	॥ ॥ नाचयिप्रसंम्वनना
याश्वकवात्रादिजालिगान	सम्बन्ध ॥ ॥ अकिमिनामा
स्वधुलादाश्रयिनिर्पंकजः सिद्धियुदायनी ॥	॥ कायवाकचिरुयव

२४

ॐ नमः ॥

ऊजाकिनीशकात्रकाकमस्विचवद्वात्र ॥	॥ किंदकिममल्लुष्टिंसं
विनाशयुनमामिमहजहन्वस	हजानदी ॥ १०२ ॥ ॥ रागा
हेत्रवी ॥ मदिमधुल्लिखकान	सूचिलं श्वदमात्राकाकस
ल्लिखवीत्रं ॥ ॥ नमामिगीचधुम	हल्लाघमवीत्रं श्वरुयदस्वता
सनमवीत्रं ॥ ॥ विविधरुद्रमरुषिगदिव्यसूतोतिशयितयनरिव	

सर्वदत्तसूचकमिलं॥

शदवास्त्रनन्दिनचरम ॥

शत्रुं दमयति नृनिष्ठायाम्

गकाभाद॥काकाननरुमाऊ

दधार्नं २०० नमः सुधार स्वर्वाङ्गैः यथा यथा दानं त्रिंशत् यथा लिख्यते

॥ अगमवादिगदलदायकं सुखिनी ॥

॥ श्रीगुरुचरणवल्लिगुरु

सप्तमं ॥ १०३ ॥ ॥ १२ ॥

नीलवर्णस्य सवर्णस्य नृकल

॥ या च दानं लिखयत्या लिखेत् ॥

ॐ

१ नमस्को नमः १
२ नमो नमः २
३ विष्णु नमः ३
४ नमो नमः ४
५ नमो नमः ५
६ नमो नमः ६
७ नमो नमः ७
८ नमो नमः ८
९ नमो नमः ९
१० नमो नमः १०
११ नमो नमः ११
१२ नमो नमः १२
१३ नमो नमः १३
१४ नमो नमः १४
१५ नमो नमः १५
१६ नमो नमः १६
१७ नमो नमः १७
१८ नमो नमः १८
१९ नमो नमः १९
२० नमो नमः २०

ॐ दिना

येन सभादि

येन गमसा न

येनागमदि

येन विषय

येन विनिमयवेन

येन विषयकमन

येन विषयगमसा न

येन विविदागक

येन विनक

येन विनिमयवेन

येन विनिमयवेन

येन विविदागक

येन विविदागक

येन विविदागक

येन विविदागक

येन विविदागक

येन विविदागक

येन विविदागक

येन विविदागक

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ





